अरविन्द कुमार

हिन्दी विभाग, शिव सागर विद्या मंदिर, रामदौली

मलयज की कहानी : आलोचक की नजर से

सन् 1982 ई0 में मलयज के निधन के कुछ दिनों बाद उनकी पत्नी ज्योत्सना मलयज एवं नामवर सिंह के सहयोग से उनके गद्य की एक पुस्तक प्रकाषित की गई, जिसका नाम है ''हॅंसते हुए मेरा अकेलापन''। इसमें कुल 16 कहानियॉ एवं डायरी के कुछ अंष भी प्रकाषित हैं। मलयज के गद्य की 'ौली का अंदाज निजी था। 'ाब्दों को गद्य का आकार देने के क्रम में अपने भाव, संवेदना और विचारात्मक बोध को न एक कदम आगे बढ़ाते थे न एक कदम पीछे रखते। मलयज का गद्य सघनता एवं ठोसपन को लिए हुए है।

प्रख्यात कवि 'ामषेर बहादुर सिंह ने मलयज के गद्य पर टिप्पणी करते हुए मलयज के मरणोपरांत एक लेख '' एक प्रतिभा के विकास का परिवेष'' में लिखा है। '' दरअसल उनकी प्रारंभिक रखनाओं में मेरी दिलचस्पी उनकी कविता को ही लेकर कुछ–कुछ थी, यद्यपि वह मुझे इम्मैच्चयोर भी लगती थी, जो स्वाभाविक ही था। सायास गढ़ी गयी सी। मेरी दृ"ट में, खामख्वाह जटिल। मगर धीरे–धीरे मेरे दिल में उनकी कविता के प्रति आदर पैदा होने लगा, और उनकी गद्य रचनाओं के प्रति भी। आरंभ में अर्से तक मुझे उनसे यही षिकायत रही कि वह सुलझा हुआ गद्य नहीं लिख पाते। बाद में उनके गद्य में बहुत निखार आया और वह स्वंय अपनी एक विषि"ट 'ौली निर्मित करने में सफल हो गए। आज मैं स्प"ट देख सकता हूॅ कि दरअसल उन दिनों वह एक तटस्थ तर्कपूर्ण 'ौली का माध्यम खोजने, और उसमें अभिव्यक्ति के लिए अपना एक निजी दृ"टकोण विकसित करने की प्रक्रिया से गुजर रहे थे।''

इसमें कोई 'ाक नहीं कि समय के साथ मलयज की कविता, आलोचना एवं गद्य में उस का क्रमिक विकास होता चला गया। कभी–कभी इनकी कहानी रेखाचित्र का भावबोध लिए हुए दिखती है। मलयज एक चित्रकार थे इसलिए कहानियों में प्रभाववादी चित्रकार की तरह अपने आस–पास में घटित होने वाले परिर्वतन को पकड़ने का प्रयास करते हैं।

कवि आलोचक श्री वि"णु खरे ने इनकी गद्य रचनाओं के बारें में कहा है ''मलयज का गद्य एक संवदेनषील आदमी का सर्जनात्मक गद्य है – एक ऐसी संवेदना का, जिसका प्रत्येक रोम एक सनसनाता हुआ एंटेना था, जो सब कुछ देखे सुने, पढ़े और सोचे हुए को हमेषा सार्थक आवाजों और आकारों में बदलता था।'' वि"णु खरे का यह कहना भी गौरतलब है, ''मलयज के यहॉ डायरी कब यात्रा हो जाएगी, यात्रा कब रिपोतार्ज में बदल जायगी और जिसे वे और हम कहानी मानेंगे। वह कब डायरी और रिपोतार्ज के बीच का कुछ लगेगी, यह कहना मुष्किल है।''

विजय कुमार अपनी पुस्तक ''भारतीय साहित्य के निर्माता/ मलयज'' में लिखते हैं, ''मलयज की इन गद्य रचनाओं में न तो परंपरागत ढ़ंग से किस्सागोई है और न ही प्लॉट की नाटकीयता है। वे यर्थाथ का एक ढीला–ढाला फ्रेमवर्क लेते हैं और उसका एक इम्प्रेषनिस्ट 'खाका' तैयार करते हैं।

प्रत्यक्ष ब्यौरे यहॉ हैं, पर दृष्य जगत का मानसिक प्रभाव ज्यादा महत्वपूर्ण है। लेखक बाहर के संसार में टहलते हुए जैसे साथ–साथ अपनी मानसिक अंतर्यात्रा को भी पाठक के सामने प्रस्तुत करता जाता है।''

मलयज वास्जव में कवि थे इसलिए कहानी में भी उनका कवित्व दिखाई देता है। अपनी कहानियों में भी मलयज अनुभूत किए गए दृष्यों को सायास ही उपस्थित कर देते हैं। चूॅकि मलयज दृष्य जगत के भागते क्षणों को भी पकड़ लेना चाहते हैं। इस कारण इनकी कहानी में भी एक गतिमयता है।

मलयज के मामा एवं कवि श्री राम वर्मा मलयज की गद्य विधा पर अपने लेख '' अधूरे खत–– में लिखा है, '' मलयज की कहानियॉ मुझे बहुत पंसद थीं, कविताऍ तो थी ही। मैं चाहता था उनका एक स्वतंत्र कहानी संग्रह निकले। वे मेरे कहने से ऐसा चाहने भी लगे। लेकिन कहानियॉ पत्रिकाओं में थीं। ढूॅढना था। बेल्लूर से लौटते हुए उन्होंने कभी ''खिड़की'' नाम की बड़ी अच्छी कहानी लिखी थीं। बदरी विषाल पित्ती जब इलाहाबाद में मिले थे, जब कल्पना में छपी उस कहानी पर देर तक उनसे बात करते रहे।''

इस कहानी संग्रह में पहली रचना 'बेल्लूर की एक 'ाम'' है। इस कहानी में लेखक बेल्लूर की एक 'ाम के अनछुए पहलू को अपनी नजरों से छू लेना चाहता है। इसमें दो पात्र हैं, लेखक और उसका मित्र भट्टाचार्य। दोनों बीमार और वे लोग इलाज कराने हेतु वहॉ के अस्पताल में आऍ हैं। दोनों का ऑपरेषन होना है लेकिन उन्हें अस्पताल का अनुषासन एंव वातावरण दम घोटने जैसा लगता है। उन्हें लगता है मानो वे जेल में हैं। अतः ऑपरेषन के एक दिन पहले दोनों 'ाम में अस्पताल से बाहर 'हर में घूमने निकल पड़ते हैं। यह तो निष्चित है कि दोनों बीमार हैं। अतः उनकी दृ"ट भी कुछ वैसी ही होगी। इसी कारण कहानी का प्रारंभ ही 'वत्सल 'ाम– को लेकर होता है, ''षाम! गोरैया की तरह पंख खोल मॅडराती 'ाम – चक्कर काट–काटकर अपने सम्पूर्ण ममत्व से एक नये षिषु को जन्म देने की विष्वासपूर्ण उत्कण्ठा से अपने अण्डे को छू–छू जाती सी 'ाम–वत्सल 'ाम!''

इधर लेखक बाहर की चतुर्दिक वास्तविकता को थामे–थामे अन्तर्लीन हो जाना चाहता है लेकिन यथार्थ की जो कड़वाहट है उसे वापस बाहर होने को विवष कर देती है।

लेखक इस कहानी में दो तरह का वातावरण खड़ा करता है। एक जो वह अस्पताल के बाहर दृष्य, दम घोंटू दृष्य जो कहीं न कहीं लेखक का मनोजगत से जुड़ा हैं'' भीतर सब कुछ 'ांत, ठहरा हुआ, रहस्मय मौन में ठिठका। लान की घास, चुप, पान के पत्ते भी चुप। हम आगे बढ़े, बाहरी बरामदे में 'ीषे के 'ो केस में ईसाई धर्म संबंधी पुस्तकें प्रदर्षन के लिए रखी हुई थीं – बिजली की नीली रौषनी में उनके कवर षिषु के रूॅधे नेत्रों की नीली पुतली से लग रहे थे। एक उचटती दृ"ट हमने उधर फेंकी तो लगा कि तरह–तरह के 'ी"'क, आकृतियों, अक्षरों के अर्थ, मन

को विभिन्न मुद्राओं से बहनेवाले सारे खिलौने उसके पास में टूट चूके हैं..... ये तरह–तरह के 'ाी''ाक आकृतियॉ केंचुल के कफन हैं, जिनसे उन मृत अर्थो का 'ाव ढ़ँक दिया गया है।''

दूसरी तरफ बाहा जगत् का दृष्य है ''पहाड़ियॉ भूरे–मटमैले रंग कसे बदलकर अब नीली कोहरीली हो गयी थीं। नारियल पक रहे थे, उनकी सोंधी–सोंधी दूधिया बास हवा में तैर रही थी।... .... खेंतों में तम्बाकू और धान की हरीतिमा सॉझ के तिक्त अँधेरे को कॉफी की तरह फूँक–फूँककर पी रही थी।''

विजय कुमार ने अपने लेख ''मलयज का सर्जनात्मक गद्य'' में ठीक ही लिखा है, ''मलयज का गद्य एक गहरे अवसाद और ठहरी हुई बेचैनी का गद्य है। उसमें एक असाधारण संवेदनषीलता है और कुछ भी भड़कीला नहीं है। इसमें देखने और सोचने का विलयन होता है। बाहर प्रकृति के दृष्य हैं। वे कब मन की भीतरी पर्तो के साथ घुल जाते हैं, इसका पता नहीं चलता। यहॉ हर चीज चेतन मस्ति''क से होती हई अवचेतन तक जाती है। उसी में जीने के रहस्य तर्क की तरह उभरते हैं। सारे विवरण जैसे एक अप्रत्याषित की रचना करते हैं। विवरणों के केन्द्र में मैं है। 'समय' इन सारी कथा रचनाओं का मूल तत्व है। जो वर्त्तमान है वह चिरंतन लगता है। जो हमेषा से घटता रहा है। वह अभी एकदम हल्का ओर ताजा लगता है। वह अपनी नाटकीयता में एक फंतासी को रचता है। और अप्रत्याषित बन जाता है। मलयज कई बार परस्पर विरोधी प्रकृति के अतियथार्थवादी विम्बों की रचना करते है और ऐसा गद्य अपनी उड़ान में कविता के समस्त गुणों को आत्मसात कर लेता है – ''दृष्य एक दूसरे को काटते चलते हैं – कटी हुई रेखाएँ नागिनों की तरह रात के सीने से चिपकी मुडेरों से झूलने लगती है ..... गली में सड़क पर उतारी गई केंचुलों का अंबार लगता जाता है..... तिरस्कृत अर्थ और जलती हुई मौन समाधियॉ .... मृत लोगों ने अपने असली चेहरे कहीं छिपाकर रख दिए हैं। सब एक दूसरे की ऑख बचाकर आते हैं और सड़क पर पड़े तिरस्कृत केंचुल पहन लेते हैं....। '' (बिना चेहरोंवाली गली)

मलयज के इस गद्य संग्रह में एक कहानी जो दिखती है ''बिना चेहरोंवाली गली'', कुछ हद तक कहानी कम रेखाचित्र ज्यादा महसूस होती है। मलयज ने इस गलियारेनुमा सड़क का 'ाब्दों के माध्यम से एक जीवंत चेहरा प्रस्तुत किया है। भले ही इसक नाम '' बिना चेहरोंवाली गली'' रखा है। पर इसके पहले कि रात हो और गहरी हो और सारे चेहरे पोंछ दें, गली के जीवन में कई चीजें घटित होती है। बनारसी ने बाल्टी में भर–भरकर सड़क काफी दूर तक खींच दी है और उसके किनारे नाली के उपर अपनी बॅसखट डाल दी है। बहादुर सिंह अपना चबूतरा साफ कर चुके, अब उन्होंने उस पर सात जनम की कीचर दरी बिछा दी है और झूम–झूमकर राधेष्याम रामायण बॉच रहे हैं। मुरारी पानवाला अपनी दुकान सजा रहा है। मदन पण्डित सिर पर बनारसी साफा बॉधकर और चॉदी की मूँठवाली छड़ी लेकर सत्यनारायण की कथा कहने के बहाने रमणियों का मन–रंजन करने निकल पड़े हैं। चन्द्रकिषोर वर्मा खैराती अस्पताल के कमपाउण्डर हैं, अब ड्यूटी से लौटकर अस्पताल से चुराई हुई दवा की गोलियॉ जेब से निकालकर 'ाीषियों में रख रहा है। रास्ते के

पासवाले मैदान में गायें दुही जा रही हैं और दफ्तर के बाबू लोग लूँगी लगाये अपनी–अपनी पारी के इन्तजार में खड़े मन ही मन कुढ़ रहे हैं। और बेनी ग्वाला इस ताक में है कि कब दॉव लगे और कब गाय के असली दूध में डेरी फार्म का मक्खनिया दूध मिला दे। पड़ोसी पहाड़न की पॉच जवान क्वॉरी बेटियॉ रोज की तरह 'ीषा – कंधा लेकर श्रृंगार करने बैठ गयी हैं। मुंषी नवरंगी लाल चुंगीघर से लौटकर लंगोट पहने नंग–घडंग ननकू पहलवान से तेल–मालिष करवा रहे हैं। बगलवाले कमरे में तीन बार लगातार हाई स्कूल में फेल हुआ छात्र तीसरें पहर से ही किताबों के ढ़ेर पर झुका हुआ है। उसके ठीक सामने मकान में रहनेवाली बत्तीस व''ीय मिस रसिकप्रिया मोटे फ्रेम के काले चष्मे के नीचे अपनी भेंगी ऑख छिपाती बारजे पर खड़ी है और छात्र के कमरे की और एकटक देख रही है.....। और नीम की पत्तियॉ, भूरी–पीली, खामोषी के साथ टूट–टूटकर झर रही है, सड़क पर और खपड़ैलों पर बिछती जा रही हैं.....। और बेले में नयी–नयी कोंपलें फूटने लगी हैं .....।''

लेखक के दृष्यजगत से जो कुछ गुजर रहा है वह स्मृति में छनकर ही दृष्य बनता है। यह दृष्यजगत एक रील सा चलता रहता है। खुद लेखक इस गद्य रचना में लिखते हैं, ''सारी स्थितियॉ और दृ''टयॉ तो जैसे मेरे भीतर से जन्मी थी ओर मेरे चारों ओर छा गई थीं और मैं खंड–खंड होकर इनमें विखर गया था।''

इसी तरह लेखक ''काठ का गगन'' 'ी''र्क रचना में समय की गति से डरा हुआ दिखता है। वह लिखता है, ''समय से मुझे भय लगता है, रीढ़ की हड्डी में बर्फ– जैसी कोई चीज छू जाती मैं कॉप उठता हूँ – मेरी बॅधी हुई मुट्ठियॉ खुल जाती हैं। हॉ, यही है समय।''

भागते हुए समय में लेखक बॅधी हुई मुट्ठियॉ खोल देता है अर्थात अपना सब कुछ उत्सर्ग कर देना चाहता है। उसे डर इस बात का है कि कहीं कुछ बचा न रह जाय, जिसे मैं व्यक्त न कर सकूँ। वह प्रकृति के हर तत्व को 'ाब्दों के माध्यम से उतार देना चाहता है। वह रंगों के माध्यम से भी उसे उतारना चाहता है।

विजय कुमार ने अपने लेख ''मलयज का सर्जनात्मक गद्य'' में लिखा है, ''यथार्थ के इकहरे रूप में लेखक एक बड़ी उलट–फेर करता है। जो प्रकट है वह अप्रकट बन जाता है। जो छिपा हुआ है वह प्रकाषित होता जाता है। अनदेखा देखा हुआ बनता है। कथा की कोई 'ुरूआत नहीं है, कोई अंत नहीं है। इस देखने में एक जमा हुआ दुख है, जो पिघलता जाता है। वही सारे कथा–विन्यास का सूत्रधार है। उदासी घटनाओं को एक चरित्र देती है।

मलयज अपनी इन रचनाओं में निम्न मध्यमवर्ग की एक जटिल दुनिया को रचते हैं, उसकी अंदरूनी पर्तो को उघाड़ते है। इस निम्न मध्य वर्ग की दुनिया में स्थितियों और पात्रों का आदर्षीकरण नहीं है। जीवन ढ़ॉचे की पतली सी झिल्ली के नीचे जैसा कुछ गुजर रहा है, उसकी मार्मिक अमूर्तता को पकड़ना है। निम्नमध्य वर्ग के इस जीवन संघ''ा में सब कुछ उघड़ा हुआ, अस्त–व्यस्त और क्षरित है। मनु''यों की लालसाऍ और छोटी–छोटी चालाकियॉ हैं। क्रूरताऍ और

विद्रूप हैं। एब्सर्ड स्थितियों से झॉकती उनकी कुंठाएँ हैं। यह यथार्थ इतना अनकेपर्तीय, कसैला और एब्सर्ड है कि कई बार सारी स्थितियॉ एक प्रहसन में बदल जाती हैं। यह जीवन जीने का एक अनंत व्यापार लगता है। मलयज इसी निम्नमध्यवर्गीय जीवन के ठहराव को भेदते हुए उसकी अंदरूनी गतिषीलता में उतरते हैं। जो रोजमर्रा की अति परिचित है वह एकदम अनोखा, अप्रत्याषित और नाटकीय लगने लगता है। जाहिर है कि इसके पीछे रचनाकार के भीतर का एक अद्वितीय किस्म का धैर्य, कल्पनाषीलता और भा''ा की भंगिमा अपनी भूमिका अदा करती है। लेखक इस एब्सर्ड में रमता है। बिखरे हुए वि''ाय दिखते दुकड़े आपस में जुड़ते जाते हैं। स्थितियों का कहीं कोई सिरा नहीं है, सब आपस में गड्डमड्ड है। एक दूसरे से उलझे हुए हैं। यही है अनेक आयामी यथार्थ और एक समर्थ कलाकार इसे उसकी समूची जटिलता में पकड़ता है ''बिना चेहरोंवाली गली'' या ''नदी'' इस दृ''ट से उनकी उत्कृ''ट गद्य –रचना हैं।

मलयज ने अपनी इस सभी गद्य रचरनाओं में जिस परिवेष को रचा है उसमें विभिन्न मनोभावों और स्थितियों की एक कंपोजिट रचना है। इसमें हमारे समय का ठहराव, मनु''य को घेरनेवाली स्थितियों का उलझा हुआ ताना–बाना है। इसमें समय का ठहराव, मनु''य को घेरनेवाली स्थितियों का उलझा हुआ ताना–बाना है। इसमें समय का ठहराव, मनु''य को घेरनेवाली स्थितियों की निर्मम नग्नता, अनिष्चियता और इस सबको आपास में पिरोते हुए झण का इतिहास है। दृष्य चित्रों को रचते हुए लेखक की एक विलक्षण संवेदनात्मक सघनता और तीव्रता उभरकर आती है। एक कवि की ऐनिद्रकता और एक प्रभाववादी चित्रकार की दृ''ट वैसे मूर्त्त और सपाट स्थितियों को अमूर्तता तक लाकर एक नया आयाम जोड़ती है। उसके लिए इन गद्य रचनाओं को पढ़ा जाना चाहिए। हमारे औसत जीवन के यथार्थ की अनेक स्तरीयता को इतने कलात्मक तरीके से पकड़ने के ऐसे प्रयास हिन्दी साहित्य में बहुत कम हुए हैं। समूचे हिन्दी साहित्य में ऐसी सघन गद्य रचना दुलर्भ हैं।''

यह सच है कि मलयज ने कुछ एक गद्य (डायरी एंव आलोचना को छोड़ दे तो) लिखा परन्तु जो भी लिखा उसका सब कुछ उनका अपना था। अर्थात चाहे आप षिल्प की बात करें, चाहे कथानक की बुनावट की बात करें, चाहे उसके अन्दर की संवेदनात्मक स्थिति, सघनता, तीव्रता या यथार्थ की बात करें, हर स्तर पर एक नये रूप को लेकर मलयज का गद्य अपनी सर्जनात्मकता की पहचान कराता है।

संदर्भ सूची

1. हॅसते हुए मेरा अकेलापन .... मलयज
2. मलयज की डायरी ..... सं0 नामवर सिंह
3. भारतीय साहित्य के निर्माता मलयज .... विजय कुमार